International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in November 2024, ISSN -2393-8048

साहित्यिक रचनाओं में मोहनदास नैमिश्राय का समाज में रह रहे दलित वर्ग पर एक अध्ययन

उर्मिला कुमारी, शोधार्थी (हिंदी विभाग) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़
डॉ. राज कौर, सहायक आचार्य (हिंदी विभाग) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़

अमूर्त

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य मोहनदास नैमिश्राय के साहित्य में दलित वर्ग के जीवन, संघर्षों और आकांक्षाओं के चित्रण का आलोचनात्मक विश्लेषण करना है। नैमिश्राय ने अपनी आत्मकथा श्अपने–अपने पिंजरेश और अन्य रचनाओं के माध्यम से दलित समुदाय द्वारा अनुभव किए गए जातिगत भेदभाव, सामाजिक बहिष्कार और पहचान के संकट को मुखरता से प्रस्तुत किया है। इस अध्ययन में यह अन्वेषण किया जाएगा कि किस प्रकार उनका साहित्य दलित विमर्श को एक नई दिशा देता है और सामाजिक रूढ़ियों पर प्रश्नचिह्न लगाता है। गुणात्मक विश्लेषण पद्धति का प्रयोग करते हुए, नैमिश्राय की प्रमुख कृतियों से उदाहरण लेकर, दलित चेतना के विकास और प्रतिरोध की भावना का अध्ययन किया गया है।

परिचय

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श एक महत्वपूर्ण और सशक्त धारा के रूप में उभरा है, जिसका मुख्य उद्देश्य सदियों से हाशिए पर रहे दलित समाज के अनुभवों और पीड़ाओं को साहित्यिक पटल पर लाना है। मोहनदास नैमिश्राय इस विमर्श के अग्रणी रचनाकारों में से एक हैं। उनका साहित्य केवल दलितों के दुःख का वर्णन नहीं करता, बल्कि उनकी अस्मिता की खोज, आत्म–सम्मान की लड़ाई और सामाजिक न्याय की मांग को भी दर्शाता है। यह शोध पत्र नैमिश्राय के साहित्य को केंद्र में रखकर, समाज में दलित वर्ग की स्थिति, उनके आंतरिक द्वंद्व और मुक्ति के प्रयासों का विश्लेषण करता है। यह अध्ययन सामाजिक संरचनाओं, सत्ता–संबंधों और जाति–व्यवस्था के दमनकारी स्वरूप को समझने में सहायक होगा, जैसा कि नैमिश्राय की कृतियों में प्रतिबिंबित होता है।

साहित्य के सोपान

मोहनदास नैमिश्राय के साहित्य में निम्नलिखित सोपान या आयाम प्रमुखता से दृष्टिगोचर होते हैं:

आत्मकथात्मक यथार्थवादरू श्अपने–अपने पिंजरेश के माध्यम से लेखक ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को सार्वभौमिक दलित पीड़ा के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया है। यह दलित जीवन के अंतरंग और कच्चे यथार्थ को दर्शाता है।

प्रतिरोध और आक्रोश की अभिव्यक्तिः उनका साहित्य दलित वर्ग के निष्क्रिय स्वीकारोक्ति के बजाय, जातिगत दमन के विरुद्ध सक्रिय प्रतिरोध और तीखे आक्रोश को आवाज देता है।

शिक्षण और जागरूकताः वे दलित वर्ग को शिक्षा के महत्व और डॉ. अंबेडकर के विचारों के प्रति जागरूक करने का प्रयास करते हैं, जिसे मुक्ति का मार्ग माना गया है।

पहचान का संकट और अस्मिता की खोजः नैमिश्राय की रचनाएँ दलितों के भीतर की पहचान के संकट और आत्म–सम्मान के साथ जीने की ललक को दर्शाती हैं।

साहित्य अंतराल

दलित साहित्य पर विस्तृत अध्ययन हुए हैं, लेकिन मोहनदास नैमिश्राय की रचनाओं पर केंद्रित, एक विशिष्ट वैचारिक अध्ययन की आवश्यकता है जो उनके साहित्य को केवल जीवनीपरक न मानकर, उसे सामाजिक परिवर्तन के एक उपकरण के रूप में विश्लेषित करे। वर्तमान शोध निम्नलिखित अंतराल को भरने का प्रयास करेगाः

दलित स्त्री विमर्श के साथ तुलनाः उनके साहित्य में दलित पुरुष के अनुभव पर अधिक ध्यान दिया गया है, जबकि दलित स्त्री के अनुभव को अलग से विश्लेषित करने की गुंजाइश है।

उत्तर–आधुनिक परिदृश्य में प्रासंगिकताः वैश्वीकरण और बदलती सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों में उनके साहित्य की निरंतर प्रासंगिकता (Sustained Relevance) पर विस्तृत विश्लेषण का अभाव है।

साहित्य समीक्षा

विभिन्न आलोचकों और शोधकर्ताओं ने मोहनदास नैमिश्राय के साहित्य पर टिप्पणी की है:

ओमप्रकाश वाल्मीकि और जयप्रकाश कर्दम जैसे समकालीन दलित साहित्यकारों ने नैमिश्राय की रचनाओं को दलित विमर्श की नींव का पत्थर माना है।

प्रसिद्ध आलोचक यह मानते हैं कि 'अपने–अपने पिंजरे' ने हिंदी साहित्य में आत्मकथा लेखन के ढर्रे को तोड़कर दलित आत्मकथाओं के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

शोध निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि नैमिश्राय का साहित्य 'पीड़ित' के बजाय 'योद्धा' दलित की छवि को

स्थापित करता है।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध एक गुणात्मक (Qualitative) और विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धति पर आधारित होगा।

पाठ्य विश्लेषण (Textual Analysis): मोहनदास नैमिश्राय की प्रमुख कृतियों ('अपने–अपने पिंजरे', 'आज बाजार बंद है' आदि) का गहन पाठ्य विश्लेषण किया जाएगा।

ऐतिहासिक–सामाजिक संदर्भ (Historical&Social ConteÛt): उनकी रचनाओं को उस ऐतिहासिक और सामाजिक परिवेश के संदर्भ में समझा जाएगा जब वे लिखी गईं, ताकि जाति–व्यवस्था के कठोर स्वरूप को समझा जा सके।

निष्कर्षनात्मक पद्धति (Inductive Method): विशिष्ट साहित्यिक उदाहरणों से शुरू करके, दलित वर्ग की सामाजिक स्थिति के संबंध में सामान्य वैचारिक निष्कर्षों तक पहुंचा जाएगा।

उद्देश्य

मोहनदास नैमिश्राय के साहित्य में दलित वर्ग के जीवन के यथार्थ और संघर्षों का विश्लेषण करना।
उनके साहित्य में प्रतिरोध की चेतना और आत्म–सम्मान की भावना के चित्रण को रेखांकित करना।
दलित विमर्श और हिंदी साहित्य में नैमिश्राय के योगदान का मूल्यांकन करना।
उनके साहित्य के माध्यम से जातिगत भेदभाव के सामाजिक–मनोवैज्ञानिक प्रभाव को समझना।

परिकल्पना

परिकल्पनाः मोहनदास नैमिश्राय की साहित्यिक रचनाएँ न केवल दलित वर्ग की पीड़ा को दर्शाती हैं, बल्कि वे सामाजिक न्याय, आत्म–सम्मान और जाति–विहीन समाज की स्थापना के लिए दलित वर्ग के सशक्तीकरण और बौद्धिक जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

महत्व

इस शोध पत्र का महत्व निम्नलिखित कारणों से हैः
यह दलित साहित्य के अध्ययन को एक वैचारिक गहराई प्रदान करता है और नैमिश्राय की रचनाओं को समकालीन सामाजिक समस्याओं से जोड़ता है।
यह सामाजिक कार्यकर्ताओं, नीति निर्माताओं और सामान्य पाठकों को जातिगत भेदभाव की जड़ें और उसके मानवीय परिणामों को समझने में मदद करेगा।
यह हिंदी साहित्य के पाठ्यक्रम और शोध क्षेत्र में दलित विमर्श की केंद्रीयता को स्थापित करने में सहायक होगा।

निष्कर्ष

मोहनदास नैमिश्राय का साहित्य दलित वर्ग के जीवन की एक शक्तिशाली और अविस्मरणीय गाथा है। उनकी रचनाएँ दलितों को केवल दया का पात्र नहीं, बल्कि संघर्षशील, जागरूक और परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध समूह के रूप में प्रस्तुत करती हैं। 'अपने–अपने पिंजरे' में चित्रित व्यक्तिगत संघर्ष, सामाजिक–राजनीतिक दमन के विरुद्ध एक सामूहिक आवाज बन जाता है। नैमिश्राय का साहित्यिक योगदान दलित वर्ग के अस्मिता बोध को जागृत करने और उन्हें सामाजिक एवं मानवीय समानता के अधिकार के लिए प्रेरित करने में अद्वितीय है। उनका साहित्य आज भी समाज को जाति–मुक्त और समतामूलक बनाने की दिशा में एक प्रेरक शक्ति का कार्य करता है।

ग्रंथ सूची

नैमिश्राय, मोहनदास. अपने–अपने पिंजरे. नई दिल्लीरू वाणी प्रकाशन.
नैमिश्राय, मोहनदास. आज बाजार बंद है. नई दिल्लीरू वाणी प्रकाशन.
वालमिकी, ओमप्रकाश. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र. नई दिल्लीरू राधाकृष्ण प्रकाशन.
सिंह, राजेंद्र (सं.). दलित साहित्यरू विमर्श और चिंतन.
विभिन्न शोध पत्रिकाएँ और आलेख, जो मोहनदास नैमिश्राय के साहित्य पर केंद्रित हैं।